# कुण्डलिया छंद के विकास में महिला कुण्डलियाकारों की सहभागिता

- **परमजीत कौर 'रीत'**

हिंदी साहित्य में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के काव्य में छंदों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आदिकाल हो या भक्तिकाल या फिर रीतिकाल, हर काल में रचनाकारों द्वारा प्रचुर मात्रा में अनेक लोकप्रिय छंदों की रचना की गई है। यति, गति, लय, तुक, गण, वर्ण के नियमों से बंधे इन्हीं छंदों में से एक 'कुण्डलिया छंद' है जो जनमानस का लोकप्रिय छंद रहा है।

वर्तमान में कुण्डलिया छंद के कीर्ति स्तंभ श्री त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने कुण्डलिया छंद की विकास यात्रा के बारे में लिखा है -
"आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के अनुसार कवि एवं सूत्रकार शार्ङ्गधर ने 'हम्मीर रासो' की रचना की, जिसमें कुण्डलिया छंद का उदाहरण देखने को मिलता है। शार्ङ्गधर के ग्रंथों का समय विक्रम की चौदहवीं के अंतिम चरण में माना गया है । गोस्वामी तुलसीदास( 'कुण्डलिया रामायण') एवं स्वामी अग्रदास ने ( 'कुण्डलिया') नामक कृतियों की रचना की। कुण्डलियाकार के रूप में गिरधर का नाम बहुश्रुत है। गिरधर की कुंडलियां जन-जन में खूब लोकप्रिय हुई।

कुण्डलियों में संत गंगादास नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बाबा दीनदयाल गिरि, राय देवीप्रसाद पूर्ण, कवि ध्रुवदास जैसे अनेक रचनाकारों ने इस छंद को पल्लवित किया।

1999 में श्री रामपाल शर्मा 'काक' का कुण्डलिया संग्रह 'काक कवि की कुण्डलियाँ' प्रकाशित हुआ। सन् 2009 में डॉ. कपिल कुमार का कुण्डलिया-संग्रह 'कहें कपिल कविराय' प्रकाशित हुआ। सन् 2010 में श्री राम औतार 'पंकज' का कुण्डलिया-संग्रह 'कुण्डलिया कुंज' प्रकाशित हुआ।

कुण्डलिया छंद यात्रा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से त्रिलोक सिंह ठकुरेला द्वारा 13 जुलाई, 2012 को फेसबुक पर 'कुण्डलिया छंद' नामक समूह की शुरुआत की। त्रिलोक सिंह सिंह ठकुरेला द्वारा संपादित कुण्डलिया संकलन 'कुण्डलिया छंद के सात हस्ताक्षर' सन् 2012 में राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर द्वारा प्रकाशित हुआ जिसमें डॉ कपिल कुमार गाफिल स्वामी डॉक्टर जगन्नाथ प्रसाद बघेल डॉ रामसनेही लाल शर्मा यायावर शिवकुमार दीपक सुभाष मित्तल सत्यम एवं त्रिलोक सिंह ठकुरेला की कुण्डलिया संकलित हैं।"

कुण्डलिया छंद की इतिहास यात्रा देखने से यह स्पष्ट होता है कि कुंडलिया छंद के इतिहास में महिला रचनाकारों की उपस्थिति न के बराबर रही है, या दर्ज नहीं हो पाई है। 'कुण्डलिया संचयन' की भूमिका में इसी बात की ओर संकेत किया गया है -

"जनश्रुति है कि गिरिधर एवं उनकी पत्नी दोनों ही कुण्डलियाँ लिखते थे। जोधपुर के मुं. देवीप्रसाद द्वारा संकलित एवं सम्पादित 'महिला मृदुवाणी' पुस्तक में लिखा है, 'गिरिधर कविराय की स्त्री भी कवयत्री थी और वह भी अपने पति की देखा- देखी उन्हीं की छाया पर नीति, व्यवहार की कुण्डलियाँ बनाया करती थी, जो गिरिधर कविराय की कुण्डलियों से मिली-जुली हैं और 'सांईं' शब्द से प्रारम्भ होती हैं और इसी से ये पहचानी जाती हैं। कोई यों भी कहते हैं कि गिरिधर कविराय ने जितनी कुण्डलियाँ बनाने का संकल्प लिया था, उतनी बनाये बिना ही वह कालग्रस्त हो गये, तब उनकी स्त्री ने शेष कुण्डलिया बनाकर उनका मनोरथ पूरा किया।"

इतिहास के परिदृश्य में वर्तमान को देखें तो आज ऐसी स्थिति बिल्कुल नहीं है। आज अनेक महिला रचनाकार कुण्डलिया लेखन की ओर अग्रसर हैं। यदि हम अग्रणीय महिला कुण्डलियाकारों की बात करें तो संभवत: सबसे पहले महिला कुण्डलियाकारों में संयुक्त रूप से कल्पना रामानी एवं साधना ठकुरेला के कुण्डलिया छंद सामने आते हैं। कल्पना रामानी के वेब पत्रिका 'अनुभूति' के 5 मई 2014 अंक में एवं साधना ठकुरेला के कुण्डलिया कानन(सं. त्रिलोक सिंह ठकुरेला, सन् 2014) साझा कुण्डलिया संकलन में छपे कुण्डलिया छंदों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

2015 में त्रिलोक सिंह ठकुरेला के संपादन में 'कुण्डलिया संचयन' कुंडलिया संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा , परमजीत कौर 'रीत' एवं साधना ठकुरेला के कुण्डलिया छंद अन्य कुण्डलियाकारों के साथ प्रकाशित हुए।

2016 में त्रिलोक सिंह ठकुरेला एवं साधना ठकुरेला के संयुक्त संपादन में 'कुण्डलिया छंद के नये शिखर' प्रकाशित हुआ।
जिसमें ऋता शेखर 'मधु', डा.रंजना वर्मा ,वैशाली चतुर्वेदी आदि महिला कुण्डलियाकारों के कुण्डलिया छंद प्रकाशित हुए।

2019 में रघुविन्द्र यादव द्वारा संपादित 'मानक कुण्डलिया' कुण्डलिया संग्रह में वैशाली चतुर्वेदी, तारकेश्वरी 'सुधि', परमजीत कौर 'रीत', ' पुष्प लता शर्मा, साधना ठकुरेला

एवं अनामिका सिंह अना के कुण्डलिया छंद अन्य कुण्डलियाकारों के साथ प्रकाशित हुए ।

2023 में त्रिलोक सिंह ठकुरेला द्वारा संपादित 'अभिनव कुण्डलिया' में डॉ. उपमा शर्मा,ऋताशेखर 'मधु' , तारकेश्वरी सुधि, परमजीत कौर'रीत, डॉ. रंजना वर्मा, वैशाली चतुर्वेदी, साधना ठकुरेला, शकुंतला अग्रवाल 'शकुन' आदि महिला रचनाकारों के छंद अन्य कुण्डलियाकारों के साथ प्रकाशित हुए।

2023 में ही डॉ. बिपिन पाण्डेय द्वारा संपादित '21वीं सदी की कुण्डलिया' में डॉ. उपमा शर्मा, उषा पाण्डेय कनक, ऋताशेखर 'मधु' ,कल्पना रामानी, कहकशां,गरिमा सक्सेना, गीता पाण्डेय अपराजिता, तारकेश्वरी सुधि, नीता अवस्थी, परमजीत कौर 'रीत', माधवी चौधरी, रचना उनियाल, शकुंतला अग्रवाल 'शकुन', शशि पुरवार, डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा' आदि महिला रचनाकारों के छंद अन्य कुण्डलियाकारों के साथ प्रकाशित हुए।

2024 में त्रिलोक सिंह ठकुरेला द्वारा संपादित 'समकालीन कुण्डलिया शतक' में
अनमोल रागिनी 'चुनमुन', अनुजा मिश्रा 'सुहासिनी', आशा देशमुख, डॉ. उपमा शर्मा, ऋताशेखर 'मधु' , उर्मिला श्रीवास्तव उर्मि का किरण सिंह, गरिमा सक्सेना,ज्योतिर्मयी पंत, ज्योत्सना प्रदीप, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा , तारकेश्वरी यादव, परमजीत कौर 'रीत' ,पुष्प लता शर्मा, प्रतिभा प्रसाद कुमकुम, मनजीत कौर 'मीत', डॉ. मंजु लता श्रीवास्तव, रचना उनियाल, रजनी गुप्ता पूनम 'चंद्रिका', डॉ. रंजना वर्मा, वीणा शर्मा वशिष्ठ, वैशाली चतुर्वेदी, शशि पुरवार, शालिनी रस्तोगी, डॉ.सरला सिंह 'स्निग्धा',साधना ठकुरेला, सुशीला जोशी विद्योतमा आदि महिला रचनाकारों के छंद अन्य रचनाकारों के साथ प्रकाशित हुए।

इन साझा संग्रहों के अतिरिक्त वर्तमान में प्रकाशित और भी साझा संग्रह हो सकते हैं जिनमें महिला कुण्डलियाकारों के छंद प्रकाशित हुए हों। कुछ महिला रचनाकारों द्वारा अंतर्जाल एवं विभिन्न मंचों पर कुण्डलिया छंद प्रकाशित किए गए हैं। सीमा अग्रवाल, अन्नपूर्णा वाजपेयी, सरिता भाटिया आदि महिला रचनाकारों ने भी कुण्डलिया छंदों की रचना की है।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि अनेक साझा कुण्डलिया संकलनों में महिला रचनाकारों ने उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ अपने कुण्डलिया छंदों से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

लेकिन कुण्डलिया संग्रह के इतिहास की पुस्तक सूची देखने से पता चलता है कि 2020 तक किसी महिला रचनाकार का एकल या व्यक्तिगत कुण्डलिया संग्रह प्रकाश में नहीं आ सका था ।

2020 में डॉ रंजना वर्मा का कुण्डलिया संग्रह 'बसंत के फूल' आया और महिला रचनाकारों के खाते में पहला व्यक्तिगत कुण्डलिया संग्रह शामिल हुआ।

इसके पश्चात शकुंतला अग्रवाल 'शकुन' का कुण्डलिया संग्रह सन् 2021 में और परमजीत कौर 'रीत' का कुण्डलिया संग्रह 'कुण्डलिया सतसई' 2022 जो महिला रचनाकारों में पहली कुण्डलिया सतसई है , का प्रकाशन हुआ।

वर्तमान में महिला रचनाकारों में से ऋताशेखर 'मधु' का कुण्डलिया संग्रह 'इंद्रधनुष' , उर्मिला श्रीवास्तव उर्मि का 'हृदय के बिंब', तारकेश्वरी सुधि का 'शब्द-वीणा'2022 आदि के कुण्डलिया संग्रह प्रमुख हैं

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि घर और बाहर की ज़िम्मेदारियों को साधने वाली महिलाओं ने कुण्डलिया छंद को साधकर अपनी लेखन क्षमताओं का अभूतपूर्व परिचय दिया है। आज अंतर्जाल के युग में बहुत सी महिला रचनाकार कुण्डलिया छंद की ओर अग्रसर हैं। आशा है भविष्य में महिला रचनाकारों की लेखनी से अनेक नये कुण्डलिया संग्रह निकलेंगे एवं कुण्डलिया छंद को समृद्ध करेंगे।

---

संदर्भ ग्रंथ सूची -

कुण्डलिया कानन / सम्पादक - त्रिलोक सिंह ठकुरेला
कुण्डलिया संचयन / सम्पादक- त्रिलोक सिंह ठकुरेला
अभिनव कुण्डलिया / सम्पादक- त्रिलोक सिंह ठकुरेला
मानक कुण्डलिया / सम्पादक - रघुविंद्र यादव
दि अंडरलाइन पत्रिका ( दिसम्बर 2021) का कुण्डलिया विशेषांक / अतिथि सम्पादक- त्रिलोक सिंह ठकुरेला
एवं अंतर्जाल से साभार